IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बुन्देलखण्ड के संदर्भ में माइक्रोफाइनेंस संस्थान के माध्यम से महिला उद्यमिता: एक अध्ययन"

RAMBIHARI (Corresponding Author)

Research Scholar

Shyama Prasad Mukherjee Govt. Degree College, Prayagraj

(A Constituent P.G. College of University of Allahabad)

E- mail - ramupandey919890@gmail.com@gmail.com

Dr. Sarvesh Singh (Co- Author)

Assistant Professor in Commerce

Shyama Prasad Mukherjee Govt. Degree College, Prayagraj

(A Constituent P.G. College of University of Allahabad)

E-mail - saraaidu@gmail.com

सार

बुंदेलखंड में महिला उद्यमिता ने माइक्रोफाइनेंस संस्थानों के हस्तक्षेप के माध्यम से महत्वपूर्ण वृद्धि देखी है, जो वित्तीय सहायता, कौशल विकास और सशक्तिकरण के अवसर प्रदान करते हैं। यह क्षेत्र, जो अपनी सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों और कृषि संकट के लिए जाना जाता है, ने महिलाओं के नेतृत्व वाले सूक्ष्म उद्यमों को आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामुदायिक विकास के लिए एक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभरते देखा है। माइक्रोफाइनेंस संपार्श्विक-मुक्त ऋण, बचत विकल्प और क्षमता निर्माण कार्यक्रमों की पेशकश करके वित्तीय बहिष्कार को संबोधित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे महिलाओं को हस्तशिल्प, कृषि, डेयरी फार्मिंग और खुदरा जैसे क्षेत्रों में अपने व्यवसाय स्थापित करने और विस्तार करने में सक्षम बनाया जाता है। एमएफआई का प्रभाव आर्थिक लाभ से परे, सामाजिक गतिशीलता, निर्णय लेने की शक्ति और लैंगिक समानता को बढ़ावा देता है। हालांकि, उच्च ब्याज दरें, सीमित वित्तीय साक्षरता और सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाएं जैसी चुनौतियां अभी भी बुंदेलखंड में महिला उद्यमियों की पूरी क्षमता में बाधा डालती हैं

मुख्य शब्द: महिला उद्यमिता, माइक्रोफाइनेंस संस्थान,वित्तीय सशक्तिकरण, आर्थिक विकास

परिचय

महिला उद्यमिता आर्थिक वृद्धि और सामाजिक विकास को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभरी है, खासकर बुंदेलखंड जैसे ग्रामीण और अविकसित क्षेत्रों में। हालांकि, ऐसे क्षेत्रों में महिलाओं को अक्सर वित्तीय स्वतंत्रता के लिए महत्वपूर्ण बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जिसमें पूंजी तक सीमित पहुंच, वित्तीय साक्षरता की कमी और सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाएं शामिल हैं। माइक्रोफाइनेंस संस्थानों (एमएफआई) ने महिला उद्यमियों को ऋण, बचत और ऋण सुविधाओं सहित छोटे पैमाने की वित्तीय सेवाएं प्रदान करके इस अंतर को पाटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिनके पास संपार्श्विक और औपचारिक बैंकिंग सहायता नहीं है। माइक्रोफाइनेंस की शुरूआत ने महिलाओं को अपने व्यवसाय शुरू करने और उनका विस्तार करने, घरेलू आय में योगदान करने और अपनी सामाजिक-आर्थिक स्थिति को बढ़ाने में सक्षम बनाकर उन्हें सशक्त बनाया है। यह अध्ययन बुंदेलखंड में महिला उद्यमिता पर माइक्रोफाइनेंस के प्रभाव की जांच करता है, आत्मनिर्भरता और स्थायी व्यवसाय विकास को बढ़ावा देने में वित्तीय सहायता की प्रभावशीलता का विश्लेषण करता है।

माइक्रोफाइनेंस ने क्षेत्र में महिलाओं की वित्तीय स्थिरता, व्यवसाय विस्तार और समग्र सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण सुधार किए हैं। हालाँकि, ऋण प्राप्ति में कठिनाई, प्रक्रियागत जटिलताएँ, वित्तीय अवसरों के बारे में जागरूकता की कमी और वित्तीय प्रबंधन में अपर्याप्त प्रशिक्षण सहित चुनौतियाँ बनी हुई हैं। महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने में माइक्रोफाइनेंस की क्षमता को अधिकतम करने के लिए, लक्षित वित्तीय शिक्षा कार्यक्रमों, सरलीकृत ऋण प्रक्रियाओं और मजबूत संस्थागत समर्थन की आवश्यकता है। नीतिगत सुधार और जागरूकता अभियान महिलाओं की वित्तीय संसाधनों तक पहुँच को और बढ़ा सकते हैं, जिससे उनकी उद्यमशीलता की सफलता के लिए अधिक समावेशी और सहायक वातावरण बन सकता है। बुंदेलखंड में माइक्रोफाइनेंस पहल को मजबूत करने से अंततः क्षेत्र में आर्थिक विकास, गरीबी में कमी और दीर्घकालिक सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन हो सकता है।

माइक्रोफाइनेंस संस्थान विशेष रूप से व्यवसाय विकास और सामुदायिक सशक्तिकरण का समर्थन करने के लिए स्थापित निकाय हैं, विशेष रूप से छोटे व्यवसाय संस्थाओं या एमएसएमई के मालिकों के लिए। मुख्य रूप से, माइक्रो फाइनेंस इंस्टीट्यूशंस (LKM) को ऐसे निकायों के रूप में जाना जाता है जो सदस्यों और जनता को सूक्ष्म-स्तरीय व्यवसायों में ऋण या वित्तपोषण प्रदान करते हैं।

महिला उद्यमिता के विकास में माइक्रो फाइनेंस की भूमिका

महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने में माइक्रोफाइनेंस की भूमिका बुंदेलखंड में महत्वपूर्ण है, जो ऐतिहासिक रूप से आर्थिक पिछड़ेपन, कम महिला साक्षरता दर और पुरुष-प्रधान सामाजिक संरचना की विशेषता वाला क्षेत्र है। माइक्रोफाइनेंस तक पहुँच ने कई महिलाओं को सामाजिक-आर्थिक बाधाओं को तोड़ने और सिलाई, हस्तशिल्प, पशुपालन और खुदरा जैसे छोटे व्यवसायों में उद्यम करने में सक्षम बनाया है। माइक्रोफाइनेंस न केवल वित्तीय सहायता प्रदान करता है बल्कि कौशल विकास को भी बढ़ावा देता है, बचत को प्रोत्साहित करता है और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है। महिलाओं की उद्यमिता का समर्थन करके, माइक्रोफाइनेंस गरीबी उन्मूलन, रोजगार सृजन और क्षेत्रीय आर्थिक विकास में योगदान देता है। गरीबी उन्मूलन के लिए उद्यमशीलता और

माइक्रो फाइनेंस अंतः निर्भर चर हैं। महिलाओं के लिए माइक्रो फाइनेंस के बिना उद्यमशीलता एक कोरी कल्पना है। माइक्रो फाइनेंस के माध्यम से ही महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। स्वरोजगार के माध्यम से गरीबी उन्मूलन सरकारों की उच्च प्राथमिकता रही है लेकिन सरकारों द्वारा उद्यमशीलता को बहुत देर से महत्व दिया गया है। उद्यमशीलता की कुशलता बढ़ाने के लिए माइक्रो फाइनेंस महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

महिला उद्यमिता से सम्बन्धित टेलरिंग एवं कढ़ाई, कैंटीन एवं कैटरिंग, अचार एवं पापड़ बनाना, ब्यूटी पार्लर, हस्तशिल्प/हैंडीक्राफ्ट, प्ले स्कूल आदि क्षेत्रों में माइक्रो फाइनेंस महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण पर माइक्रोफाइनेंस का प्रभाव

इन चुनौतियों के बावजूद, माइक्रोफाइनेंस ने बुंदेलखंड में महिला उद्यमियों पर एक परिवर्तनकारी प्रभाव डाला है। कुछ प्रमुख प्रभावों में शामिल हैं:

बेहतर वित्तीय स्वतंत्रता: माइक्रोफाइनेंस महिलाओं को अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने में सक्षम बनाता है, जिससे वित्तीय सहायता के लिए परिवार के पुरुष सदस्यों पर निर्भरता कम होती है।

व्यापार वृद्धि और आय सृजन: कई महिलाओं ने अपने व्यवसायों का सफलतापूर्वक विस्तार किया है, जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई है और जीवन स्तर में सुधार हुआ है।

सामाजिक सशक्तिकरण: वित्तीय स्थिरता के साथ, महिलाओं को अपने घरों और समुदायों के भीतर अधिक निर्णय लेने की शक्ति मिलती है, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और सामाजिक गतिविधियों में उनकी भागीदारी बढ़ती है।

रोज़गार सृजन: महिलाओं के नेतृत्व वाले व्यवसाय अन्य महिलाओं के लिए रोज़गार के अवसर पैदा करते हैं, जिससे स्थानीय आर्थिक विकास में योगदान मिलता है।

उद्देश्य

1. माइक्रोफाइनेंस में महिलाओं की जनसांख्यिकी और वित्तीय उपयोग का विश्लेषण करना।

2. माइक्रोफाइनेंस तक पहुँचने और उसका उपयोग करने में चुनौतियों की पहचान करना।

शोध पद्धति

शोध अध्ययन बुंदेलखंड में माइक्रोफाइनेंस के माध्यम से महिला उद्यमिता के विकास का विश्लेषण करने के लिए एक वर्णनात्मक शोध डिजाइन का अनुसरण करता है। प्रतिभागियों के निष्पक्ष चयन को सुनिश्चित करने के लिए एक संभाव्यता नमूनाकरण तकनीक, विशेष रूप से यादृच्छिक नमूनाकरण विधि का उपयोग किया गया था। नमूना इकाई में माइक्रोफाइनेंस संस्थानों (एमएफआई) के अधिकारी शामिल हैं, जिनका नमूना आकार 124 उत्तरदाताओं का है। डेटा संग्रह में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों स्रोत शामिल थे, जहाँ प्राथमिक डेटा एक

संरचित प्रश्नावली के माध्यम से एकत्र किया गया था, और द्वितीयक डेटा पत्रिकाओं, पुस्तकों और प्रकाशित शोध पत्रों से प्राप्त किया गया था।

डेटा विश्लेषण

यह खंड डेटा संग्रह के दौरान प्राप्त परिणामों से संबंधित है। परिणाम और विश्लेषण तालिकाओं और बार आरेख के रूप में एक्सेल शीट का उपयोग करके प्रस्तुत किए गए हैं। डेटा विश्लेषण के लिए SPSS सॉफ़्टवेयर का उपयोग किया गया है। विश्लेषित डेटा का व्यवस्थित प्रतिनिधित्व और डेटा की व्याख्या नीचे दी गई है। माइक्रो फाइनेंस संस्थान से ऋण प्राप्त करने के लिए महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली जनसांख्यिकी, उपयोग और चुनौतियों का वर्णन करने के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी (ची-स्क्वायर और प्रतिशत) का उपयोग किया गया था।

परिकल्पना परीक्षण 1

H0: संगठित (महिला विकास कार्यक्रम) कार्यक्रमों और एमएफआई से ऋण स्वीकृत करने के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है

H1: संगठित (महिला विकास कार्यक्रम) कार्यक्रमों और एमएफआई से ऋण स्वीकृत करने के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है

स्वतंत्र चर: एमएफआई से ऋण स्वीकृत करना

आश्रित चर: संगठित (महिला विकास कार्यक्रम) कार्यक्रम।

तालिका 1. परिकल्पना 1 के लिए काई-स्क्वायर परीक्षण

	कीमत	डीएफ	महत्व
पियर्सन ची स्क्वायर	223.724a	9	.000

तैयार की गई शून्य परिकल्पना कि संगठित (महिला विकास कार्यक्रम) कार्यक्रमों और एमएफआई से ऋण स्वीकृत करने के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है” को खारिज कर दिया गया है

तालिका 2. माइक्रोफाइनेंस संस्थान से स्वीकृत ऋण

S.No.	विकल्प	उत्तरदाताओं की संख्या	%
1.	सहमत	54	43.5
2.	असहमत	2	1.6
3.	तटस्थ	22	18.5
4.	पूरी तरह सहमत	44	35.5
5.	पूरी तरह असहमत	1	0.8
6.	कुल	124	100

उपरोक्त तालिका 2 इस बारे में जानकारी दर्शाती है कि क्या महिलाओं के लिए माइक्रो फाइनेंस संस्थानों से ऋण स्वीकृत कराना आसान है। यह देखा गया कि 43.5% उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं कि ऋण प्राप्त करना आसान है, 1.6% उत्तरदाता असहमत हैं, 18.5% उत्तरदाता तटस्थ हैं, 35.5% उत्तरदाता दृढ़ता से सहमत हैं और 0.8% उत्तरदाता दृढ़ता से असहमत हैं कि महिलाओं के लिए एमएफआई से ऋण स्वीकृत कराना आसान है।

परिकल्पना परीक्षण 2

H0: महिलाओं के जीवन स्तर में वृद्धि और एमएफआई द्वारा दी जाने वाली वित्तीय सहायता के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

H1: महिलाओं के जीवन स्तर में वृद्धि और माइक्रोफाइनेंस संस्थान द्वारा दी गई वित्तीय सहायता के बीच महत्वपूर्ण अंतर है। स्व

तंत्र चर: महिलाओं का जीवन स्तर

आश्रित चर: वित्तीय सहायता

तालिका 3. परिकल्पना 2 के लिए ची-स्क्वायर परीक्षण

	कीमत	डीएफ	महत्व
पियर्सन ची स्क्वायर	164.557a	6	.000

तालिका 3 से, तैयार की गई शून्य परिकल्पना कि "महिलाओं के जीवन स्तर में वृद्धि और माइक्रोफाइनेंस संस्थान द्वारा दी गई वित्तीय सहायता के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है" को खारिज कर दिया गया है।

तालिका 4 . महिलाओं के जीवन स्तर में वृद्धि

S.No.	विकल्प	उत्तरदाताओं की संख्या (बहुविकल्पीय आधारित प्रतिक्रियाएँ)	%
1.	सहमत	62	50
2.	असहमत	1	0.8
3.	तटस्थ	17	13.7
4.	पूरी तरह से	44	35.5
5.	सहमत	0	0
6.	पूरी तरह से	124	100

उपरोक्त तालिका 4 में माइक्रोफाइनेंस में महिलाओं की भागीदारी से महिलाओं के जीवन स्तर में वृद्धि के बारे में जानकारी दी गई है। यह देखा गया है कि 50% उत्तरदाता सहमत हैं, 0.8% असहमत हैं, 13.7% तटस्थ हैं, 35.5% दृढ़ता से सहमत हैं कि माइक्रोफाइनेंस में महिलाओं की भागीदारी से महिलाओं के जीवन स्तर में वृद्धि होती है

अधिकांश देशों में माइक्रोफाइनेंस का प्राथमिक लक्ष्य महिलाएँ रही हैं। अध्ययन के लिए एकत्रित किए गए डेटा प्रश्नावली और माइक्रोफाइनेंस संस्थान द्वारा प्राप्त किए गए थे। सबसे पहले, हमने एक सर्वेक्षण किया और पाया कि 70% महिलाओं को माइक्रोफाइनेंस योजनाओं और सुविधाओं के बारे में पता ही नहीं है। इसलिए, सरकार और गैर सरकारी संगठनों को पहल करनी चाहिए और महिलाओं को माइक्रोफाइनेंस सुविधा के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए। माइक्रोफाइनेंस संस्थानों को महिलाओं को अपना व्यवसाय शुरू करने और अधिक उत्पादकता के लिए धन का उपयोग करने के तरीके के बारे में प्रशिक्षण कार्यक्रम भी प्रदान करना चाहिए। 59% उत्तरदाताओं ने माइक्रोफाइनेंस संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में नहीं कहा। यह देखा गया है कि महिला उधारकर्ताओं को ऋण प्राप्त करने के लिए अपने परिवार से समर्थन नहीं मिल रहा है, और इससे महिलाओं का मनोबल और आत्मविश्वास कम होता है। अशिक्षा के कारण महिलाओं को ऋण के लिए आवेदन करने और संस्थान की योजनाओं को समझने में कठिनाई होती है। केवल ग्रामीण महिलाएँ ही ऋण के लिए आवेदन नहीं कर रही हैं, बल्कि शहरी और अर्ध शहरी महिलाएँ भी माइक्रोफाइनेंस संस्थानों से ऋण ले रही हैं।

विश्लेषण में पाया गया कि ब्याज की कम दर महिलाओं को अन्य वित्तीय क्षेत्रों की तुलना में माइक्रोफाइनेंस से ऋण लेने के लिए प्रेरित करती है। विश्लेषण में यह भी पाया गया कि अधिकांश माइक्रोफाइनेंस उधारकर्ता

गृहिणी हैं और अपना खुद का व्यवसाय शुरू करना चाहती हैं। काई-स्क्वायर परीक्षण से पता चलता है कि संगठित (महिला विकास कार्यक्रम) कार्यक्रमों और माइक्रोफाइनेंस संस्थान से ऋण स्वीकृत करने के बीच महत्वपूर्ण अंतर है और साथ ही महिलाओं के जीवन स्तर में वृद्धि और माइक्रोफाइनेंस संस्थान द्वारा दी जाने वाली वित्तीय सहायता के बीच भी महत्वपूर्ण अंतर है। माइक्रोफाइनेंस संस्थानों को महिलाओं को अपना व्यवसाय कैसे शुरू करें और धन का अधिक उत्पादक तरीके से उपयोग कैसे करें, इस बारे में अधिक प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करने चाहिए। महिला उद्यमिता का अध्ययन दो कारणों से एक अलग समूह के रूप में किया जाना चाहिए। सबसे पहले, इसे आर्थिक आंदोलन और विकास के एक मूल्यवान और अप्रयुक्त स्रोत के रूप में मान्यता दी गई है जो न केवल अपने लिए बल्कि दूसरों के लिए भी रोजगार पैदा करता है। इसके अलावा, कुछ मामलों में महिलाएँ अक्सर समाज को विभिन्न सामाजिक समस्याओं के वैकल्पिक समाधान प्रदान करती हैं। दूसरे, महिला उद्यमिता के विषय को पहले सामाजिक विज्ञान और सामान्य समाज में उपेक्षित किया गया है। अध्ययन का भविष्य का दायरा यह जानना है कि कितनी महिलाओं ने माइक्रोफाइनेंस संस्थान से ऋण लेकर व्यवसाय शुरू किया है। इस अध्ययन को आगे बढ़ाया जा सकता है ताकि शोधकर्ता उन चुनौतियों को और अधिक स्पष्ट रूप से समझ सकें जैसे कि महिलाएँ माइक्रो फाइनेंस के बारे में क्यों जागरूक नहीं हैं और उन्हें परिवार का समर्थन क्यों नहीं मिल रहा है।

निष्कर्ष

माइक्रोफाइनेंस संस्थानों के माध्यम से महिला उद्यमिता पर अध्ययन महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण और उद्यमशीलता की सफलता को बढ़ाने में माइक्रोफाइनेंस की परिवर्तनकारी भूमिका को रेखांकित करता है। माइक्रोफाइनेंस संस्थान वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए एक महत्वपूर्ण तंत्र के रूप में उभरे हैं, जो महिलाओं को अपने व्यवसाय स्थापित करने और विस्तार करने में सक्षम बनाते हैं, जिससे उनकी वित्तीय स्वतंत्रता और समग्र सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार होता है। निष्कर्ष बताते हैं कि माइक्रोफाइनेंस तक पहुँच ने महिला उद्यमियों के बीच व्यवसाय विकास, आय सृजन और आत्मनिर्भरता में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हालाँकि, अध्ययन में कई चुनौतियों पर भी प्रकाश डाला गया है जो इस क्षेत्र में माइक्रोफाइनेंस की पूरी क्षमता में बाधा डालती हैं। इन चुनौतियों में उपलब्ध वित्तीय अवसरों के बारे में सीमित जागरूकता, प्रक्रियात्मक जटिलताओं के कारण ऋण प्राप्त करने में कठिनाइयाँ और महिलाओं के बीच अपर्याप्त वित्तीय साक्षरता शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाएँ और संपार्श्विक की कमी अक्सर वित्तीय संसाधनों तक महिलाओं की पहुँच में और बाधाएँ खड़ी करती हैं। माइक्रोफाइनेंस के लाभों को अधिकतम करने के लिए, महिलाओं की जागरूकता और माइक्रोफाइनेंस सेवाओं तक पहुँच बढ़ाने के लिए लक्षित वित्तीय शिक्षा कार्यक्रम, नीतिगत हस्तक्षेप और संस्थागत समर्थन की आवश्यकता है। एमएफआई की क्षमता को मजबूत करना, ऋण प्राप्ति प्रक्रियाओं को सरल बनाना, तथा महिलाओं के नेतृत्व वाले उद्यमों के लिए अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देना महिला उद्यमिता पर माइक्रोफाइनेंस के प्रभाव को और बढ़ा सकता है। माइक्रोफाइनेंस बुंदेलखंड में महिलाओं को सशक्त बनाने, आर्थिक विकास को बढ़ावा देने तथा क्षेत्र में दीर्घकालिक सतत विकास को आगे बढ़ाने के लिए एक अधिक प्रभावी उपकरण के रूप में काम कर सकता है।

संदर्भ

1. मौर्य एन.के. और पांडे के. उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में महिला विकास। बुंदेलखंड अनुसंधान पोर्टल
2. नरूला एम. उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में शिक्षा, लिंग, पहुंच और प्रारंभिक शिक्षा में भागीदारी। शैक्षिक प्रशासन विभाग, एनयूईपीए। (2009)
3. हिमुसी, सी., (2019)। माइक्रोफाइनेंस और महिला सशक्तीकरण: भारत से साक्ष्य-साहित्य की समीक्षा। जर्नल ऑफ द गुजरात रिसर्च सोसाइटी, 21(6), पृ.1014-1017।
4. लावूरी, वी. और परमानिक, आर.एन., (2014)। महिलाओं के निर्णय लेने पर माइक्रोफाइनेंस का प्रभाव: आंध्र प्रदेश का एक केस स्टडी। जर्नल ऑफ ग्लोबल एंटरप्रेन्योरशिप रिसर्च, 4(1), पृ.11।
5. सिकारी सुप्रिया, (2018)। पर्यटन उद्योग में महिला उद्यमिता। आईओएसआर जर्नल ऑफ बिजनेस एंड मैनेजमेंट, पृ. 60- 67
6. बनकर और सी.एस. यतनल्ली. (2018). महिला सशक्तीकरण में माइक्रो फाइनेंस की भूमिका. आईएयू इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, 7(2), पृ. 63-66.
7. योगेंद्रराजा, आर., और सेमासिंघे, डी. (2015). माइक्रो क्रेडिट महिला उद्यमिता विकास के लिए एक उपकरण है. जर्नल ऑफ मैथमेटिक्स एंड सिस्टम साइंस, 5, 385- 390
8. मोहंती, जे. जे. (2018). भारत में वित्तीय समावेशन प्राप्त करने में छोटे वित्तीय बैंकों (एसएफबी) का लाभ उठाना. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बिजनेस एंड मैनेजमेंट इन्वेंशन (आईजेबीएमआई), 7(2).
9. जान सोफी, एफ. (2013). सूक्ष्म उद्यमों को वित्तपोषित करना: इस्लामिक माइक्रोफाइनेंस के लिए संभावित मूल्य आधारित हाइब्रिड मॉडल बनाना. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेंट एंड बिजनेस रिसर्च, 2(2), 108-122.
10. मोदी, ए., पटेल, के. जे., और पटेल, के. एम. (2014)। ग्रामीण महिला सशक्तीकरण पर माइक्रोफाइनेंस सेवाओं का प्रभाव: एक अनुभवजन्य अध्ययन। आईओएसआर जर्नल ऑफ बिजनेस एंड मैनेजमेंट, 16(11), 1-8।
11. अरोड़ा, एस. मीनू (2010), माइक्रोफाइनेंस हस्तक्षेप-भारत के विशेष संदर्भ में संबंधित साहित्य में एक अंतर्दृष्टि। अमेरिकन जर्नल ऑफ सोशल एंड मैनेजमेंट साइंसेज, 2151-1559।
12. विन्न, जे. (2005) महिला उद्यमी: क्या हम बाधाओं को दूर कर सकते हैं?. इंटरनेशनल एंटरप्रेन्योरशिप एंड मैनेजमेंट जर्नल, 1(3), 381-397।
13. ब्रश, सी. जी., और कूपर, एस. वाई. (2012)। महिला उद्यमिता और आर्थिक विकास: एक अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य। उद्यमिता और क्षेत्रीय विकास, 24(1-2), 1-6.
14. कुमार रवि (2016) गुलबर्गा शहर में महिला उद्यमियों को सशक्त बनाने में माइक्रो फाइनेंस का योगदान। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बिजनेस क्वांटिटेटिव एंड इकोनॉमिक्स एंड एप्लाइड मैनेजमेंट रिसर्च वॉल्यूम 2, अंक 8,